संपादक के नोट

मैं तुम सबको मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता येशु मसीह के मीठे और अतुल्य नाम से अभिवादन करती हूँ। निर्गमन ३:१४ – परमेश्वर ने मूसा से कहा, "मैं जो हूं सो हूं।" और उसने कहा, इस्राएलियों से तू इस प्रकार कहना:, मैं हूं ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।"

परमेश्वर हमारे साथ है। वह हमारे साथ संसार के अंत तक रहेगा। मत्ती २८:१८–२० कहता है – तब येशु ने उनके पास आकर कहा, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ तथा उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और जो जो आज्ञाएं मैंने तुम्हें दी हैं उनका पालन करना सिखाओ। और देखो, मैं युग के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूं। हमारे माता–पिता, भाई और बहन हमारे साथ हमेशा नहीं रहेंगे। अगर सबसे ऊँचे अधिकार के लोग भी हमारे साथ अंत तक रहने का आश्वासन देंगे तो भी वें अपना वादा पूरा नहीं कर पाएंगे।

जब पूनम की रात में हम दौड़ते हैं, हमे ऐसा लगता है कि चंद्र भी हमारे साथ दौड़ रहा है, जब हम छिपते हैं तब हमे लगता हैं कि चंद्र छिप रहा है, जब हम खड़े होते हैं तब ऐसा लगता है कि वह स्थिर है। लेकिन जब यह पूनम की रात अमावस्य की रात बनती हैं तब वह हमारे साथ नहीं रह सकता है। इसी प्रकार इस संसार के लोगों के साथ कोई हमारे साथ अंत तक नहीं हो सकता हैं लेकिन केवल एक व्यक्ति जो नहीं बदलता है वह हमारा येशु मसीह है।

इब्रानियों १३:८ कहता है – येशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक–सा है।

- परमेश्वर हनोक के साथ था और हनोक हमेशा परमेश्वर के साथ चलता था। उतपत्ति ५:२४ कहता है – हनोक तो परमेश्वर के साथ–साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया, क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।

- परमेश्वर हमेशा नूह के साथ था और परमेश्वर नूह को बचाया, जैसे दिया गया है उतपत्ति ६:९ – नूह की वंशावली यह है। नूह तो धर्मी ओर अपने समय के लोगों में निर्दोष व्यक्ति था। नूह परमेश्वर के साथ साथ चला करता था

- परमेश्वर याकूब के साथ था, उतपत्ति २८:१५ कहता है – और सुन, मैं तेरे साथ हूं, और जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरी रक्षा करूंगा, और तुझे इस देश में लौटा ले आऊंगा, क्योंकि जो प्रतिज्ञा मैंने तुझ से की है, जब तक उसे पूरी न कर लूं, तब तक तुझे नहीं छोडूंगा।"

- परमेश्वर यूसुफ के साथ था इसलिए उसके पास हर कार्यों में सफ़लता थी। उतपत्ति ३९:२ – और यहोवा यूसुफ के संग था। इसलिए वह एक सफल पुरूष हो गया। वह अपने मिस्री स्वामी के घर में रहता था।

- परमेश्वर ने मूसा से कहा, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। जैसे निर्गमन ७:१ कहता है – तब यहोवा ने मूसा से कहा, देख, मैं तुझे फ़िरौन के लिए परमेश्वर–सा ठहराता हूँ; और तेरा भाई हारून तेरा नबी होगा।

- इसी प्रकार, परमेश्वर मूसा के साथ चालीस साल था। जैसे परमेश्वर मूसा के साथ था वैसे ही वह यहोशू के साथ था। यहोशू १:५ कहता है – तेरे जीवन भर कोई भी मनुष्य तेरे सामने ठहर नहीं सकेगा। जिस प्रकार मैं मूसा के साथ रहा उसी प्रकार तेरे साथ भी रहूंगा। न तो मैं तुझे धोका दूंगा और न त्यागूंगा।

- दाऊद परमेश्वर को हमेशा उसके साथ महसूस करता था और वह हर युद्ध में विजई हुआ। भजन संहिता २३:४ कहता है – चाहे मैं मृत्यु के घोर अन्धकार की तराई में होकर चलूं, फिर भी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरी छड़ी और तेरी लाठी से मुझे शानति मिलती है।

परमेश्वर के प्रियों, परमेश्वर सदा तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के साथ है तुम्हे बचाने के लिए। यिर्मयाह १:१९ – वे तेरे विरूद्ध उठकर लड़ेगें पर तुझ पर विजयी नहीं होंगे, क्योंकि बचाने के लिए मैं तेरे साथ हूं, यहोवा की यही वाणी है।

वह निरंतर है तुम्हे बचाने के लिए। यिर्मयाह १५:२० कहता है – तब मैं तुझे इस प्रजा के लिए कांसे की दृढ़ शहरपनाह बनाऊंगा; और यद्यापि वे तेरे विरूद्ध युद्ध करेंगे पर तुझ पर प्रबल न होंगे, क्योंकि मैं तुझे बचाने और तुझे छुड़ाने के लिए तेरे साथ हूं," यहोवा की यह वाणी है।
उनके चहरों से न डरो, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हे छुड़ाने के लिए, यूँ कहता है प्रभु।

हाँ, वह हमेशा तुम सबके साथ है और तुम्हे सारी समसयों से बचाएगा जैसे दिया गया है भजन संहिता १२१:७ – यहोवा सारी विपत्ति से तेरी रक्षा करेगा; वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।

क्योंकि प्रभु तुम्हारे साथ हमेशा है तुम सारी चीज़ो में विजई बनोगे तुम्हारे अंत के दिनों तक। मत्ती २४:१३ कहता है – परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।

इसलिए, वह उनको पूर्ण रीति से बचाने के काबिल है जो परमेश्वर के पास उसके द्वारा आते हैं, देखते हुए कि वह सदा के लिए जीवित है और उनके लिए मध्यस्त करता है।

हमारा परमेश्वर जिसने वाचा बांधा है वह कोई मामूली व्यक्ति नहीं है। और हर एक ज़बान कहेगा कि येशु मसीह प्रभु है, पिता परमेश्वर की महिमा के लिए।

हमारा परमेश्वर एक महान परमेश्वर होने के बावजूद, वह हमसे अब भी प्रेम करता है और कहता है, मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।

यशायाह ४९:१६ कहता है – देख, मैंने तेरा नाम अपनी हथेली पर खोद कर लिख लिया है; तेरी शहरपनाह निरन्तर मेरे सामने है।

यशायाह ६२:३ कहता है – तू यहोवा के हाथ में एक शोभायमान मुकुट, हां, अपने परमेश्वर के हाथ में राजसी पगड़ी ठहरेगी।

इसलिए हम सब हमारा विश्वास परमेश्वर पर डाले और उसकी ओर हमेशा देखे, जो सब कार्यों को करने के योग्य है।

फिर मिलने तक....।

– पास्टर सरोजा म

प्रभु की ओर से एक जलद आशीष

पवित्र–शास्त्र यशायाह ५८:८ में कहता है – तब तेरा प्रकाश भोर के समान चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा। तेरी धार्मिकता तेरे आगे आगे और यहोवा का तेज तेरे पीछे पीछे चलेगा। इस वचन द्वारा प्रभु हमारे जीवन में उसके आशिषों के बारे में हमसे कहता है। अगर हम उसकी आशिषों के बारे में सोचे तो अच्छा आरोग्य, शांति में रहना और निश्चई आराम यह एक आशीष है। इस प्रकार हम उसकी बहुत–सी आशिषों को हमारे जीवनों में गिन सकते हैं। माता–पिता बच्चों को शिक्षित करते हैं और उनकी पढ़ाई–लिखाई के बाद उन्हे जब नौकरी मिलती हैं तब वह एक आशीष है, जब बेटी बड़ी होती है और एक अच्छा जीवन–साथी पाती है तब यह एक आशीष है। शादी के बाद, जब एक जोड़ी को समय पर बच्चा होता है तब यह एक आशीष है। इसी प्रकार हम हमारे जीवन में बहुत–से आशिषों को गिन सकते हैं। लेकिन ऊपरी वचन में प्रभु एक आशीष के बारे में कहता है जो तुम जल्द पाओगे – आरोग्य का आशीष। प्रभु हमे पाप, बंधन, बीमारियों, कर्ज़ों और बहुत सारी और बातों में से हमे आरोग्य में ला सकता है। जब प्रभु हमे छुड़ाता है और आशीष देता है तब हमारा जीवन एक सुगंध बन जाता है। अगर हम गर्मी के मौसम में पेड़ों को देखते हैं वें अपने पत्तों के झड़ने कें बाद नए पत्तों को उगते हुए पाए जाते हैं और वें पेड़ बहुत सुंदर लगते हैं। हमारे गाँव में जहाँ मैं पाठ–शाला जाती थी बहुत–से ईमली के पेड़ हुआ करते थे। मौसम में नए पत्ते और कलियाँ पेड़ों को नए पत्तों और कलियों के साथ देखते थे, वें बहुत सुंदर नज़र आते थे। सुबह में हम पाठ–शाला जाते थे, नीचे गिरे फूल एक बिछाई हुई चादर के समान नज़र आता थे। प्रभु हमारे जीवनों को पेड़ के समान सुंदर बनाता है। पुराने पत्तों के झड़ने के बाद, नए पत्तें आते हैं, नए फूलों और पत्तों के साथ हमारा जीवन एक सुगंध बन जाता है। प्रभु कहता है, कि यह वह जल्द करने वाला है। जब हम गिनती के किताब में देखते हैं कि बहुत सारी छड़ियाँ प्रभु के सामने रखी गई थी लेकिन केवल हारून की छड़ी में पत्ते, फूल और फल लगे। यह सब अगले ही दिन हुआ और तुरंत हुआ। प्रभु का कार्य तुरंत आरंभ हुआ। आज प्रभु कहता है कि वह तुरंत हमे आशीष देगा और हमे सुंदर बनाएगा और हमे, हमारे जीवनों में सुगंध देगा जैसे कहा गया है यशायाह ५८:८ में। बहुत–से बार, हमे शांति और आराम देने के लिए हमारे जीवनों में वह बहुत कार्यों को करता है। जब प्रभु हमारे साथ है तब हम में शांति होती है। जैसे कि ऊपरी वचन कहता है, पत्तों, फूलों और फलों का लगना तुरंत होगा। यह तुरंत किया जाएगा। अब किस के जीवन में तुरंत फल लगेंगे, सुगंधित होगा और सुंदर बनेगा। यह उसके चुने हुओं के जीवनों में होगा। पवित्र–शास्त्र कहता है गिनती १७:४,५,८ में– उन लाठियों को मिलाप वाले तम्बू में साक्षी के सन्दूक के आगे रख दे जहां मैं तुम से भेंट किया करता हूं। और ऐसा होगा कि जिस पुरूष को मैं चुनूंगा उसकी लाठी से कोंपलें फूट

निकलेंगी। इस्राएली जो तुम पर कुड़कुड़ाते रहते हैं, वह कुड़कुड़ाना मैं अपने ऊपर से दूर करूंगा। दूसरे दिन ऐसा हुआ जब मूसा साक्षी के तम्बू में गया तो क्या देखा कि हारून की लाठी जो लेवी के घराने के लिए थी उसमें न केवल कोंपलें वरन कलियां, फूल और पके बादाम भी लगे हैं। प्रभु ने यह कार्य तुरंत कर दिया। उसने यह एक ही दिन में कर दिया। दूसरे ही दिन से उस लाठी पर फल था। यह प्रभु ने ही बदला है और वह यह कार्य हमारे जीवनों में आज भी कर सकता है। इस के लिए हमे उसका प्रिय बनना ज़रूरी है। प्रभु उसका कार्य हमारे जीवनों में तुरंत करेगा। इसलिए हमे उसका बनना हैं। जब हम प्रभु के साथ बने रहते हैं तब जो हम ने यशायाह ५८:८ में पढ़ा हैं हमारे जीवनों में सच होगा। प्रभु हमारे जीवनों में से सारी बुराईयाँ निकाल सकता है। जब प्रभु कहता है कि वह तुरंत करेगा तब हमे अपना विश्वास प्रभु पर रखना है, जैसे हमने देखा हैं कैसे हारून की लाठी में कलियाँ, फूल और फल आए। आज हम एक सूखा वृक्ष हो सकते हैं। हम विश्वास में सूख चुके होंगे, परमेश्वर पर जो प्रेम है और उसके उद्धार में या किसी और प्रकार से सूख चुके होंगे। लेकिन आज भी जब हम प्रभु को स्वीकार करते हैं तब वह उस कार्य को हमारे जीवनों में तुरंत करेगा। परमेश्वर मूर्ख लोगों को चुनता हैं। पवित्र–शास्त्र १ कुरिन्थियों १:२७ में कहता है कि उसने हमे जाना है, चुना है और हमे उसके बेटे–बेटियाँ बनाया है। इसलिए यह हमारे लिए आशीष है। – परन्तु परमेश्वर ने संसार के मूर्खों को चुन लिया है कि ज्ञानवानों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने संसार के निर्बलों को चुन लिया है कि बलवानों को लज्जित करे। इसलिए जब हम प्रभु के साथ एक बने रहते हैं, उसके वचन का पालन करते हैं और विश्वास करते हैं कि प्रभु हमे ज़रूर फूलने और फल लाने देगा, तब यह दुनिया हमे ज़रूर पागल कहेगा। जब तुम "हाल्लुयाह, यहोवा की स्तुति हो" कहोगे, तुम पागल कहलाए जाओगे। इसलिए यह आशीष, उद्धार और अनुग्रह कमज़ोर लोगों द्वारा प्राप्त किए जाते हैं। वें बुद्धि में, धन, आरोग्य, विश्वास और आशीष में कमज़ोर हो सकते हैं। प्रभु ऐसे लोगों को उठा सकता है और दिखा सकता है कि यह उसका कार्य है।

प्रभु ने अब्राहाम को बुलाया और उसे उसके सामर्थ से उठाया। प्रभु ने उससे बात की, कि वह उसके वंशज को तारों के समान बनाएगा। अब वह बूढ़ा था और उसकी पत्नी भी बूढ़ी थी। लेकिन अब्राहाम ने उसके जीवन का मूल इस वचन पर रखा जो प्रभु ने उससे बात की थी। शारिरिक रीति से कोई भी रास्ता नहीं था कि उन्हे बच्चा हो। प्रभु के यह वचन अब्राहाम के लिए जीवन था। जब समय आया, परमेश्वर ने अब्राहाम के परिवार को स्वर्ग के तारों के समान बनाया। यह ज़रूरी है हमारे लिए जानना कि हमारा परमेश्वर नहीं बदलने वाला है। आज भी प्रभु कहता है कि वह तुम्हे आशीष देगा और उस फल और उद्धार को तुम्हारे जीवनों में तुरंत लाएगा, तब भी, जब तुम्हारे जीवन में कोई आशा नहीं हैं और

तुम्हारा जीवन उद्देश्य के बिना और व्यर्थ जैसे लग रहा हो। अगर प्रभु अब्राहाम को छोटी उम्र में चुनता और उससे वादा के संतान के बारे में बताता तो हर प्रचारक अब्राहाम के बारे में नहीं प्रचार करता। जब उसका पिता बनने का कोई रसता नहीं था, उस समय प्रभु ने उसे बुलाया और वादा किया कि बुद्धिमानों को उलझाए ताकि कोई भी डींग न मारे कि यह उसके स्वयं बुद्धि, कार्य या धन से हुआ है। प्रभु सबके मूँह को बंद कर सकता है उसके योजनों के अनुसार। प्रभु मूर्ख व्यक्ति को उठाता है ताकि बुद्धिमान नीचे लाए जाए और उसे आशिषित करता है। प्रभु टूटों को उठाता है, कमज़ोर और निराशा से भरा व्यक्ति जो सोचता है कि उसके पास कोई मौका नहीं उठाता है ताकि वह इस संसार को दिखा सके कि जो वें नहीं कर सकते हैं, वह कर सकता है। यह हमारा जीवित परमेश्वर है। इसलिए हमे अपने परमेश्वर पर हर कार्य और हर चीज़ में विश्वास करना चाहिए। प्रभु ने अब्राहाम से बात की लेकिन वह वचन अब्राहाम के जीवन में कई साल बाद पूरा हुआ। इसलिए उसके सारे वर्षों में और उसके बुढ़ापे की उम्र में यह वचन जो प्रभु से थी, उसे जीवन देता होगा। इस लिए एक दिन फूल दिखाई दिए, उसके जीवन में फल दिखे और परमेश्वर ने उसे बहुत–सी जातियों का पिता ठहाराया और हमारा भी पिता ठहाराया। वह हमारा महान और अद्‌भुत परमेश्वर है।

प्राथनाओं का उत्तर क्यों नहीं मिलता है? प्रभु हमारी प्राथनाओं को सुनता है और उत्तर देता है हर समय। इसलिए जब हम प्रार्थना करे, प्रभु हमारी प्रार्थनाओं से प्रसन्न होना चाहिए। कभी–कभी हमारे प्रार्थनाओं का जवाब नहीं मिलता है। हमे दूसरों के बारे में बुरा नहीं बोलना चाहिए। जब हम लोगों से मिलते हैं हमे एक अच्छा गवाही बनना है प्रभु के लिए और हमेशा प्रभु का भय मानना हैं। इस प्रकार जब हम प्रभु के पास जाते हैं तब वह हमारी प्रार्थनाओं से प्रसन्न होता है। लेकिन जब हम दूसरों के बारे में दुष्ट बातें करेंगे और उसकी उपस्थिति में, तब प्रभु तुम्हारी प्रार्थना से प्रसन्न नहीं होता। तुम जो भी माँगो, प्रभु प्रसन्न नहीं है। इसलिए उसकी स्तुति तुम्हारे हृदय में होना ज़रूरी है, और उसका वचन तुम्हारे साथ हर सभय होना ज़रूरी है। तुम्हे वचन से कभी अलग नहीं होना चाहीए। तब प्रभु तुम्हारी प्रार्थना से प्रसन्न होगा और तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर मिलेगा। हम देखते हैं भजन संहिता १४९:८ – कि उनके राजाओं को जंजीरों से, और उनके प्रतिष्ठित पुरूषों को लोहे की बेड़ियों से जकड़ रखें; जिनके पास परमेश्वर की स्तुति और परमेश्वर का वचन है, प्रभु उनकी प्रार्थनाओं को सुनेगा और उनके जीवन को सुगंधित बनाएगा। हमारे परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी बनाई। पवित्र–शास्त्र कहता है भजन संहिता १४६:५–७ – क्या ही धन्य है वह जिसका सहायक याकूब का परमेश्वर है, और जिसकी आशा अपने परमेश्वर यहोवा में है; जिसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है, सब बनाया, जो सदा के लिए विश्वासयोग्य रहता है; जो सताए हुओं का न्याय चुकाता है; जो भूखों को भोजन

देता है। यहोवा बन्दियों को स्वतन्त्र करता है। जब हम हमारे परमेश्वर पर विश्वास करते है और हम उसके साथ हर दिन एक हैं तब हम आशिषित लोग हैं। हमारे परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी बनाई और उन सबको जो उनमें है। इसलिए अगर हम उसपर विश्वास करें और हर बात में उसकी आज्ञा का पालन करें तब हम आशिषित लोग बनेंगे। ऐसा क्या कार्य है जो उसके हाथों से नहीं किया जा सकता है? संसार हमे क्या दे सकता है? संसार हमे दुष्ट मार्ग में ले जा सकता है, वह हमे पाप द्वारा ले जा सकता है और हमे परमेश्वर से अलग कर सकता है। संसार हमारे लिए कोई अच्छाई नहीं कर सकता है। लकिन प्रभु ने, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी बनाई, हमारे जीवन में बहुत चीज़े कर सकता है। कोई नहीं, केवल याकुब का परमेश्वर, तुम्हारा और मेरा परमेश्वर वह कर सकता है जो भजन संहिता १४६:७ में लिखा गया है। इस संसार में यह कोई नहीं कर सकता है। जो सताए हुओं का न्याय चुकाता है; जो भूखों को भोजन देता है। यहोवा बन्दियों को स्वतन्त्र करता है। पवित्र–शास्त्र कहता भजन संहिता १४६:८ में – यहोवा अन्धों की आंखें खोलता है, यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है, यहोवा धर्मियों से प्रेम रखता है। प्रभु धार्मिक लोगों से प्रेम करता है। प्रभु उनकी प्रार्थनाओं को सुनता है और उन्हे कोई भी गहरे गड़ढ़े से बचाता है जिसमें वें हो सकते हैं। हमे ध्यान देना है कि हम दूसरों के बारे में बुरा न बोले और ऐसे लोगों कि संगति में भी न रहे। हमे अपने कानों को बुराई सुनने से बंद करना है ताकि हम प्रभु की उपस्थिति में जा सके और अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर पाए। हम चाहे कितने भी कमज़ोर हो, प्रभु हमारी प्रार्थनाओं को सुनेगा और हमे बलवान बनाएगा। प्रभु के बिना हम कुछ भी नहीं, हम टूटे बर्तन हैं। प्रभु हमे हमारी कमज़ोरी में मज़बूत बनाता है। इस लिए जब तुम उसके नज़र में अच्छे और सच्चे हो, तब तुम्हारी दस अनुरोध में से वह तुम्हारी एक अनुरोध को ज़रूर पूरा करेगा। इसलिए अगर तुम उसे लगातार खोजते रहोगे तब तुम्हारे सारे दस के दस अनुरोध के उत्तर मिलेंगे और तुम इस संसार में सबसे आशिषित व्यक्ति होगे। हर दिन उसकी नज़रों में हम धार्मिक लोग बनना है। जब हम अपना जीवन वचन के अनुसार जीते हैं तब एक दिन हम संसार के नज़रों में ज़रूर स्वर्ण समान बनेंगे। हम देखते हैं २ शमूएल २२:२१ में – यहोवा ने मेरी धार्मिकता के अनुसार मुझे प्रतिफल दिया है, मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार ही बदला दिया है। हमारा परमेश्वर पक्षपात करनेवाला नहीं है। वह हमारे जीवनों में हमारे धार्मिकता के अनुसार उत्तर देगा। वह एक न बदलने वाला परमेश्वर है। जब हमारी प्रार्थना सच्चाई में है, तब वह प्रसन्न होता है और हमारी प्रार्थनाओं का जवाब ज़रूर देगा। वह उत्तर देगा और हमारे सारे कार्यों को आशीष देगा और हम आशिषित व्यक्ति बनते हैं। पवित्र–शास्त्र कहता है नीतिवचन ११:२८ – जो धन पर भरोसा रखता है, वह सूखे पत्ते के समान झड़ जाता है, परन्तु धर्मी लोग नए पत्ते के समान लहलहाते है। धर्मी नया जीवन पा सकते है, उभरते हुए कोमल पत्तियों की तरह। इसलिए आज भी कहीं न कहीं हम अपने ऊपर घमंड़ करते होंगे, हमारी

बुद्धि या हमारे संपत्ति पर। यह घमंड़ एक बाधा बनती है प्रभु को हमारी प्रार्थनाओं को सुनने में। जब हम प्रभु के प्यारे बनते हैं तब हम एक नए पत्ते के जैसे बनते हैं जो वृक्ष पर आता है और हारून के उस लाठी के समान है जिसमें, कलियाँ, फूल और फल लगे। यह सब तुरंत हुआ। प्रभु हमे तुरंत उसके आशिषों से भरने वाला है। हमारा प्रभु और उसका वचन नहीं बदला है। वचन सच्चा है। अगर तुम इस सच्चाई को ग्रहण करोगे तो तुम्हारा भी सूखा जीवन पत्तें, फूलों और फलों से निश्चित रूप से भर जाएंगे। तब वह जीवन एक आशिषित जीवन होगा। एक दिन तुम कह सकोगे "सियोन देश मेरा है।" जब हम इन चीज़ों को समझते हैं तब हमारे जैसा बुद्धिमान कोई नहीं। इसलिए हमे उसकी आज्ञा मानना हैं और उसकी इच्छा अनुसार हर बातों में जीना हैं। एक दिन ज़रूर आएगा जब लोग अच्छा–बुरा को जानेंगे और उन्हे जानेंगे जिन्होने परमेश्वर की सेवा कि और जिन्होने नहीं किया। पवित्र–शास्त्र मलाकी ३:१८ में कहता है – तब तुम फिर एक बार धर्मी और दुष्ट का भेद, अर्थात जो परमेश्वर की सेवा करता है और जो नहीं करता, उन दोनों में भेद कर सकोगे। हमे जानना हैं कि हमे परमेश्वर के वचन के संग बंधे रहना हैं। प्रभु ने हमे चेतावनी दी है कि भेड़िया भेड़ के कपड़ों में आएगा। यह बात होने वाली है लेकिन हें धोखा नहीं खाना चाहिए और भेड़िए के बातों में आकर नहीं गिरना चाहिए। वें दिखने में भेड़ के रूप में हो सकते हैं लेकिन अंदर वे भेड़ियों के जैसे होते हैं जो लोगों को खा जा सकते हैं। बहुत से लोग जो यह सच्चाई को नहीं जानते भेड़िए के पंजों मे आ जाते हैं। हम चाहे जहाँ भी हो हमे परमेश्वर के सच्चे वचन से बंधे रहना चाहिए। हमे मूर्ख नहीं बल्कि बुद्धिमान रहना चाहिए ताकि हम भेड़िया और भेड़ को पहचान सके। परमेश्वर का वचन हमारे जीवनों में उद्धार ला सकता है, और कुछ नहीं। जब कोई फल नहीं होता, प्रभु उस ड़ालि को काट देता है और जिस ड़ालि में फल लगता है उसे वह छाँटता है ताकि उसमे और पत्ते, फूल और फल आए। वह शांति का राजा है और शांति को लौटाएगा। वह जहाँ भी है वहाँ शांति ले आता है। एक भी प्राण जब पश्चाताप करकर स्वर्ग जाता है, वहाँ अत्यंत आनंद होता है। अगर वहाँ दस प्राण हैं, वहाँ और ज़्यादा आनंद है। यह ज़रूरी है कि हम सच्चाई को जाने। पवित्र–शास्त्र भजन संहिता ३७:२५ में कहता है – मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूं, परन्तु मैंने न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ और न कभी उसके वंश को भीख मांगते देखा है। जब तुम उसकी नज़रों में धर्मी हो तब वह तुम्हे कभी नहीं ठुकराएगा। हमे यह जानना चाहिए और इस वचन को हमारे हृदय में रखना हैं।

पवित्र–शास्त्र मूसा के बारे में निर्गमन ३२:१३, १४, २२ में कहता है – अपने सेवकों अर्थात अब्राहाम, इसहाक और याकूब को स्मरण कर, जिनसे तू ने अपनी ही शपथ खाकर कहा था, "मैं तुम्हारे वंश को आकाश के तारों के समान बढ़ाऊँगा और यह सारा देश जिसकी मैंने चर्चा की है, मैं उसे तुम्हारी सन्तान को दूँगा और वे सनातनकाल के लिए उसके

अधिकारी होंगे। तब यहोवा ने अपनी प्रजा की हानि करने का विचार बदल दिया। प्रभु ने मूसा की प्रार्थना को सुना और उसका हृदय बदलने लगा – हारून ने उत्तर दिया, "मेरे प्रभु का क्रोध मुझ पर न भड़के; तू तो स्वयं इन लोगों को जानता है, ये बुराई करने को तत्पर रहते हैं। जब मूसा प्रभु की उपस्थिति में था तब लोगों ने हारून पर दबाव डाला और उसने उनका सोना लिया और उसमे से विक्र बनाया, कहते हुए कि वह उनका परमेश्वर था जो उनकी अगुवाई करेगा। इसलिए वें उस विक्र की आराधना करने लगे जो भेड़ के कपड़ों में एक भेड़िया था। मूसा पर से उनकी आशा टूट गई यह सोचते हुए कि वह वापस नहीं आएगा। वे बड़ी आवाज़ के साथ स्तुति करने लगे। प्रभु ने मूसा से कहा कि वह जाकर देखें कि लोग क्या कर रहे थे। तब मूसा क्रोधित हुआ और हारून से पूछने लगा और उसने उत्तर दिया, जैसे लिखा गया है २२ वे वचन में हारून ने उत्तर दिया, "मेरे प्रभु का क्रोध मुझ पर न भड़के; तू तो स्वयं इन लोगों को जानता है, ये बुराई करने को तत्पर रहते हैं। इसके बावजूद मूसा ने लोगों के लिए प्रार्थना किया कि प्रभु उन्हे फिर एक बार माफ़ कर दे या फिर उसके नाम को उसके पुस्तक से निकाल दे। प्रभु ने मूसा से बात की, जैसे दिया गया है निर्गमन ३२:३२–३५ – "पर अब तू इनके पाप क्षमा कर, यदि नहीं तो अपनी पुस्तक से जिसे तू ने लिखा है मेरा नाम मिटा दे।" तब यहोवा ने मूसा से कहा, "जिस किसी ने मेरे विरूद्ध पाप किया है, मैं उसी का नाम अपनी पुस्तक से मिटा दूँगा। परन्तु तू अब जा और अपने लोगों कि अगुवाई कर और उन्हें उस स्थान पर ले जा जिसके विषय मैंने तुझे बताया है, देख, मेरा दूत तेरे आगे आगे जाएगा। तो भी जिस दिन मैं दण्ड दूँगा उस दिन उन्हें इस पाप का भी दण्ड दूँगा। तब यहोवा ने हारून के द्वारा बनाए गए बछड़े के कारण उन पर मरी भेजी। परमेश्वर एक दयालु परमेश्वर है जिसने उन्हे मिस्र देश से बाहर लाने में अगुवाई की। उसने मूसा से कहा कि वह लोगों की अगुवाई करे लेकिन वह उस समय पापियों को सज़ा देता था और उनका सामना करता। प्रभु ने उसके लोगों को मिस्र से छुड़ाया, बंधन से छुड़ाया लेकिन उन्होने एक विक्र बनाई और उसकी आराधना करने लगे। आज भी क्या हम ऐसी बातों में फ़से हैं? आज विक्र क्या बनता है? क्या घमंड़ हमारे हृदय में एक विक्र बना है। एक हृदय जिस में प्यार नहीं और परमेश्वर का भय नहीं वह परमेश्वर की उपस्थिति में एक विक्र बनता है। प्रभु का न्याय निष्चित रूप से आएगा और वह अच्छे वृक्ष को राज्य में ले जाएगा और दुष्ट काटे जाएंगे और आग में झोकें जाएंगे। आज दोनो साथ बढ़ेंगे, लेकिन नियुक्त समय पर प्रभु दुष्ट को काटेगा। इससे बचने के लिए हमे हर दिन उसके वचन से बंधे रहना चाहिए। प्रभु को हमारी प्रार्थना सुनना और जवाब देना है। हर दिन हमे अपने आपको जानना हैं और हर दिन हमे सचेत और जागृत रहना हैं ताकि हम अपने आप को दुष्ट लोगों से बचा सके उसके वचन और उसके लोगों के विरूद्ध बात करने वालों से बच सके। प्रभु हमारी प्रार्थना सुनेगा और हमे आशीष देगा। हमारा परमेश्वर कभी नहीं बदलेगा। वह हमारी प्रार्थना को

सुनेगा और उत्तर देगा जब वह उसके सामने एक मीठे सुगंध जैसे आता है उसके उपस्थिति में। तब प्रभु उसकी उपस्थिति से उस स्थान को और हमे भर देता है उसके आशिषों सहित। पवित्र–शास्त्र धर्मियों के बारे में बताता है जैसे दिया गया है नीतिवचन १०:६, २०, २८, ३२ – धर्मी के सिर पर आशिषें होती हैं, पर दुष्टों के मुंह को हिंसा छा लेती है। धर्मी की जीभ सर्वोत्तम चांदी के समान है, परन्तु दुष्ट के मन का कोई मूल्य नहीं। आशा पूर्ण होने पर धर्मी को आनन्द होता है, परन्तु दुष्टों की आशा मिट जाती है। धर्मी के होंठों से ग्रहणयोग्य बातें, परन्तु दुष्ट के मुंह से कुटिल बातें निकलती हैं। अब प्रभु से आशीष पाने के लिए हमारे जीवन में, हमे बहुत सी चीज़ो में सावधान रहना हैं। धर्मी हमेशा उसकी गवाहियों के बारे में सोचेगा और प्रभु के बारे में अच्छा सोचेगा। जब हम बढ़ा–चढ़ाकर गलत बातें करेंगे तब हमारी प्रार्थनाऐं उसके नज़रों के सामने ठीक नहीं रहता। इसलिए हमे धर्मी व्यक्ति बनना ज़रूरी है ताकि प्रभु हमारी प्रार्थनाओं को सुने। जब बुराई बोली जाती है, हमे प्रभु की सच्चाई बोलना चाहिए और दुष्ट के मूँह को बंध करना चाहिए। दुनिया हमारे विरूद्ध जा सकता है लेकिन प्रभु हमारी प्रार्थना को सुनेगा प्रभु ने जो सिंह के मूँह को बंद किया, वह दुनिया के मूँह को भी बंद करेगा। इसलिए अगर तुम वह करते हो जो प्रभु के नज़रों में सुहावना है तब वह तुम्हारी प्रार्थना को सुनते रहेगा और एक दिन वह तुम्हारी सारी प्रार्थना की माँगों को पूरा करेगा।

अब एक और तरीका है हमारे जीवन में पत्तें, फूल और फलों को लगने के लिए। पहले भाग में हमने देखा कि अपना हृदय, अपना बोल–चाल प्रभु की दृष्टि में सुहावना होता है तो हमारा जीवन एक सुगंध बनेगा। तब हम फलवंत बनेंगे। दूसरे तरीकें हैं कि हम दयालु लोग बने जैसे पवित्र–शास्त्र कहता है मत्ती ५:७ में – धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

जब हम दया दिखाते हैं तब परमेश्वर के नज़र में हम भी दया प्राप्त करेंगे। हम दया के बारे में पढ़ते हैं भजन संहिता १४६ में। वे कैसे लोग जिनपर प्रभु ने दया दिखाया। उसने उनपर दया की जो बंधन में थे, जो अंधे थे, जो शैतान के सताए थे और बहुत सी बातों में वह लोगों पर दया करता था। हम देखते हैं भजन संहिता १४६:७–८ में – जो सताए हुओं का न्याय चुकाता है; जो भूखों को भोजन देता है। यहोवा बन्दियों को स्वतन्त्र करता है। यहोवा अन्धों की आंखें खोलता है, यहोवा झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है, यहोवा धर्मियों से प्रेम रखता है। हमारा परमेश्वर बहुत से तरीकों में दयालु है। इसलिए हमारे जीवन में भी हमे यह दया लोगों को बताना चाहिए। जिनके हृदय में परमेश्वर के लिए भय हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं वें प्रभु का प्यार पाएंगे। हमे यह जानना हैं कि हर चीज़ में, हमारी प्रार्थनाओं में, हमारे कार्यों में, हमारे बोल–चाल में हम परमेश्वर को भांए तब

प्रभु हमारी सारी प्रार्थनाओं को सुनेगा, प्रभु हमे सारी चीज़ों में जय देगा। और परमेश्वर यह बहुत दिनों बाद नहीं करेगा लेकिन जैसे दिया गया है यशायाह ५८:८ में, वह इसे तुरंत करेगा। – तब तेरा प्रकाश भोर के समान चमकेगा, और तू शीघ्र चंगा हो जाएगा। तेरी धार्मिकता तेरे आगे आगे और यहोवा का तेज तेरे पीछे पीछे चलेगा। यह हमारा परमेश्वर है। यह तो शैतान है जो परमेश्वर के खिलाफ़ लड़ता है। जब प्रभु क्रूस पर था, शैतान ने सोचा कि वह मर गया और मिट गया है, लेकिन तीसरे दिन प्रभु मृतकों में से जी उठा और झिंदा हुआ, मृत्यु पर विजई होकर। इसलिए जब हम प्रभु में बने होते हैं तब सारी बातों में वह हमे विजय दिलाएगा।

– पास्टर सरोजा म